

## डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 15, ईसा। 30-31 © 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 15, यशायाह अध्याय 30 और 31 है। खैर, आज शाम आपमें से प्रत्येक को फिर से देखकर अच्छा लगा।

बारिश नहीं हो रही है, इसलिए सोमवार की रात नहीं होनी चाहिए, लेकिन वैसे भी, हम यहां हैं और आप यहां हैं और मैं यहां हूँ और इसलिए हम शुरू करने के लिए तैयार हैं। मुझे दो घोषणाएँ करनी हैं। एक, जैसा कि आपको शायद याद होगा, हर महीने फ्रांसिस असबरी सोसाइटी एक संगोष्ठी प्रायोजित करती है और हमारे पास इस गुरुवार, सुबह 10.30 बजे से दोपहर तक एक संगोष्ठी आ रही है।

रॉन स्मिथ अमेरिका में 19वीं शताब्दी में स्वतंत्रता पर श्रृंखला में दूसरा काम कर रहे हैं और यह मुद्दा न केवल राजनीतिक रूप से, बल्कि धार्मिक रूप से भी कितना महत्वपूर्ण है। तो, वह गुरुवार को उस श्रृंखला को समाप्त कर देगा और वह आदमी वहीं है और आपको आने के लिए आमंत्रित किया गया है। उसके बाद हल्का लंच है।

आमतौर पर, व्याख्यान लगभग एक घंटे का होता है, फिर आधे घंटे का प्रश्न-उत्तर और फिर हल्का दोपहर का भोजन। तो, इस गुरुवार सुबह 10.30 बजे आने के लिए आपका हार्दिक स्वागत है। दूसरी घोषणा, हम स्वयंसेवकों पर बहुत अधिक निर्भर हैं।

आज अधिकांश समय हमारे यहां एक स्वयंसेवक मौजूद था और यद्यपि वह यहां है, फिर भी वह गुमनाम रहेगी। यदि आप लिफ़ाफ़े भरकर बुलाए जाने के इच्छुक हों, तो मैं बार्कर्स का नाम लूंगा जो हमारे दो बहुत ही वफादार स्वयंसेवक हैं। यदि आप समय-समय पर इस प्रकार की चीज़ के लिए बुलाए जाने के इच्छुक हों, तो क्या आप केटी डिडल को अपना नाम और ईमेल देंगे, क्या आप अपना हाथ पकड़ेंगे, केटी, या सारा मैक्कीन, ठीक बगल में?

इसलिए, आज शाम को जाने से पहले, यदि आप इस तरह की चीज़ों के लिए समय-समय पर बुलाए जाने के इच्छुक हैं, तो कृपया उन्हें देखें और उन्हें अपना ईमेल पता दें। ठीक है, आइए मिलकर प्रार्थना करें।

धन्यवाद, प्रभु यीशु, कि आपने स्वेच्छा से काम किया। धन्यवाद कि आपने उस अंतराल में कदम रखना चुना जब कोई और नहीं था जब हम पाप, शर्म और दुःख में खोए हुए थे। आपका धन्यवाद कि आप हमारे लिये आये। तूने अपना प्राण दे दिया, कि हम जीवित रहें।

धन्यवाद। जैसे ही हम आपके शब्दों का अध्ययन करते हैं, हम आपसे हमारी यादों को ताजा रखने के लिए कहते हैं कि यह सब केवल आपके द्वारा किए गए कार्यों के कारण ही संभव है। धन्यवाद।

आपकी प्रशंसा करता हूँ। भगवान का जीवित शब्द. इसलिए, हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज शाम अपनी आत्मा में हमारे पास आएं और हमें लिखित शब्द को समझने में सक्षम बनाएं, खासकर जब यह आपको इंगित करता है, लेकिन क्योंकि यह आपके आने और जीने के लिए आवश्यक हर चीज की नींव रखता है। आस्तिक का जीवन.

हमारी मदद करें, प्रभु यीशु, और हम आपके नाम पर आभारी होंगे। तथास्तु।

हम आज रात अध्याय 30 और 31 को देख रहे हैं। वे इस अनुक्रम का हिस्सा हैं, अध्याय 28 से 33, जिसे मैंने धिक्कार है उन लोगों के लिए जो इंतजार नहीं करेंगे। यदि आप पिछले दो सप्ताह से यहां हैं, तो आप जानते हैं कि हम इस अनुभाग को देख रहे हैं। वास्तव में, यह पिछले सप्ताह था जब हमने पहली बार ऐसा किया था, लेकिन हमने देखा कि इन अध्यायों में परेशानियों का एक क्रम चल रहा है।

यह उन तत्वों में से एक है जो उन्हें एक साथ जोड़ता है। और विशेष रूप से, वहाँ शोक है, वहाँ विनाश है, वहाँ शोक है, उन लोगों के लिए खेद है जो प्रतीक्षा नहीं करेंगे। हम पहले भी प्रतीक्षा करने के बारे में बात कर चुके हैं।

हम आज रात इसके बारे में विस्तार से बात करेंगे. विश्वास का पर्याय है, और हमें इसे अपने दिमाग में रखना होगा। यदि मैं ईश्वर की प्रतीक्षा नहीं करूंगा, तो यह कहा जा सकता है कि मैंने भरोसा नहीं किया है।

अब, मैंने कहा कि हम आज रात ढाई अध्याय करने का प्रयास करने जा रहे थे, और हम ऐसा ही कर रहे हैं। हम संकटों के तीसरे अध्याय 29 पर गौर करना शुरू कर रहे हैं। इसकी शुरुआत 29:15 से होती है।

पहला दुःख अध्याय 28 में था, एप्रैम के शराबियों का गौरवपूर्ण ताज, उत्तरी राज्य के शासक, जो वास्तव में, शायद वास्तव में और आध्यात्मिक रूप से दोनों नशे में हैं। फिर, अध्याय 29, श्लोक 1 में, हम फिर से देखते हैं, ये नेता हैं, और इस बार एरियल के नेता हैं, जो निश्चित रूप से यरूशलेम शहर का संदर्भ है। तो, उत्तर में शराबी नेताओं के लिए शोक, दक्षिण में उन नेताओं के लिए शोक, और हमने 29.9 में वही स्थिति देखी।

अपने आप को चकित करो और चकित हो जाओ। अपने आप को अँधा करो और अन्धे ही रहो। नशे में रहो, परन्तु शराब से नहीं।

डगमगाता है, लेकिन तेज़ ड्रिंक से नहीं। तो फिर, ये नेता जो असंवेदनशील हैं, असंवेदनशील हैं, ऐसा लगता है जैसे वे नशे में हैं और लोगों को निर्देशित करने की कोशिश कर रहे हैं। अब, हम पद 15 में तीसरी विपत्ति पर आते हैं।

यह किसे संबोधित है? ठीक है, आइए अधिक शाब्दिक बनें। ये लोग क्या कर रहे हैं? वे छुप रहे हैं, और ऐसा क्या है जो वे छुप रहे हैं? वे अपनी सलाह छुपा रहे हैं. अब, सलाह तो सलाह है, विशेषकर राजनीतिक सलाह।

आपको नियमित दरबार में राजा और रानी, राजकुमार और राजकुमारी और परामर्शदाता मिले हैं। यह आम तौर पर पांच-व्यक्ति का सौदा होता है, और उस परामर्शदाता के पास राजा और रानी, राजकुमार और राजकुमारी को सलाह देने की जबरदस्त शक्ति होती है कि क्या करना है और कैसे करना है। तो ये लोग अपनी सलाह से क्या कर रहे हैं? वे इसे छिपा रहे हैं, और किससे छिपा रहे हैं? भगवान।

जिनके कर्म अंधेरे में हैं, जो कहते हैं, कौन हमें देखता है, कौन हमें जानता है, तुम बातें उलट देते हो। अब, वे चीजों को कैसे उल्टा कर रहे हैं? पद 16. वे चीजों को परमेश्वर के हाथों में छोड़ने के बजाय अपने हाथों में ले रहे हैं।

कैरिन, तुम भी यही कहने वाली थी? ठीक है, बिलकुल ठीक, बिलकुल ठीक। वे ऐसे व्यवहार कर रहे हैं मानो वे कुम्हार हों और भगवान मिट्टी हों। वे अपने उद्देश्यों और सिद्धांतों के लिए ईश्वर का उपयोग कर सकते हैं, और ऐसा करना कितना आसान है।

मैं कभी-कभी अपने प्रार्थना जीवन को निराशा से देखता हूँ, और सोचता हूँ कि कई तरीकों से मैं जो हासिल करना चाहता हूँ उसे आगे बढ़ाने के लिए मैं बस भगवान का उपयोग करने की कोशिश कर रहा हूँ, यह कहने के लिए पर्याप्त समय बर्बाद करने के बजाय कि, भगवान, आप क्या हासिल करना चाहते हैं? और आप अपने उद्देश्यों को पूरा करने में मेरा उपयोग कैसे करना चाहेंगे? ये लोग इसे बिल्कुल अपने सिर पर रख रहे हैं, और हम अध्याय 30 और 31 में जाने पर देखेंगे, विशेष रूप से वह सलाह क्या है। वे किस प्रकार की सलाह दे रहे हैं जिसे वे प्रभु से छिपाने की कोशिश कर रहे हैं? अब, मैं अक्सर यह कल्पना करना पसंद करता हूँ, कि यहां ये लोग चांसलरी के नीचे एक बेसमेंट कमरे में हैं, और वे कह रहे हैं, अब, हम निश्चित रूप से नहीं चाहते कि यशायाह को पता चले कि हम क्या हैं यहाँ कह रहे हैं।

अब हर कोई कसम खाता है, हर कोई कसम खाता है, यह पूरी तरह से गुप्त है, कोई बात नहीं करेगा, है ना? ठीक है, ठीक है, एक बैठक स्थगित हो गई, वे दरवाजे से बाहर आए, और यशायाह खड़ा है और कहता है, नमस्ते, दोस्तों। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि हम सोचते हैं कि हम ईश्वर से छिप सकते हैं? और यह उत्पत्ति अध्याय 3 तक जाता है। वहां से निकल जाओ, ईव, वह मेरी झाड़ी है। जैसे कोई बच्चा तकिये के नीचे सिर रखकर कह रहा हो, तुम मुझे नहीं देख सकते, लेकिन वह वहीं है।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। अब, फिर से, हमने निर्णय और वादे, निर्णय और आशा के बदलते अनुपात के बारे में बात की है। तो एक बार फिर, निर्णय के केवल दो छंदों के बाद, हमारे पास वादा है।

और वादा क्या है? मैं विशेष रूप से चाहता हूँ कि आप श्लोक 18 को देखें। भगवान क्या वादा करता है? बहरे सुनेंगे, और अंधों की आंखें देखेंगी। अब, याद रखें, यह अध्याय 6 तक जाता है। यशायाह, आप जो संदेश प्रचारित करते हैं, वह शुरू में उनकी आंखों को अंधा कर देगा, उनके कानों को बहरा कर देगा, और उनके दिलों को मोटा कर देगा।

लेकिन भगवान कहते हैं कि यह कहानी का अंत नहीं है। एक दिन आएगा जब इन शराबी, अंधे, बहरे नेताओं की जगह ऐसे लोग होंगे जो देख सकते हैं, जो सुन सकते हैं। और मैं हमारे अपने ईसाई जीवन के संबंध में बार-बार इसके बारे में सोचता हूँ।

पवित्र आत्मा हमसे वादा करता है कि हमारे पास अंतर्दृष्टि होगी, और हम चीजों को देखने में सक्षम होंगे। कभी-कभी यह जरूरी नहीं कि एक आशीर्वाद हो। कभी-कभी हम देख सकते हैं कि लोग किधर जा रहे हैं, और वे उसे बिल्कुल भी नहीं देख पाते हैं।

कभी-कभी हम ऐसी बातें सुनते हैं जो शायद हम नहीं सुनना चाहेंगे। लेकिन यह हमारे लिए पवित्र आत्मा का उपहार है, कि हम संवेदनशील होंगे। और इसलिए पद 19, फिर कौन आनन्द मनाएगा? और वे किस बात से आनन्दित होंगे? दीन और नम्र, कंगाल, और वे किस बात में बड़ाई करेंगे? प्रभु, इस्राएल का पवित्र।

यहाँ फिर से, मुझे लगता है कि यह अध्याय 6 से जुड़ा है। यशायाह ने पवित्र को देखा, और उसने जो देखा वह बहुत डरावना था, खासकर जब उसने खुद को उस प्रकाश में देखा। लेकिन फिर भी, अंततः यही खुशी का कारण है। पवित्र, वह जो बिल्कुल उत्कृष्ट है, जिसने स्वयं को हम इस्राएलियों को दे दिया है, वह आनंद का कारण होगा।

फिर से, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं आज रात यहाँ बेतुकी बातें कर रहा हूँ, लेकिन वे बेतुकी बातें हैं क्योंकि वे सच हैं। यदि हम अपनी खुशी के लिए परिस्थितियों पर निर्भर रहेंगे तो वह उड़ जाएगी। असली आनंद इस बात में है कि आप प्रभु को जानते हैं, और प्रभु को जानने से आपको शाश्वत जीवन मिलता है।

कठिन परिस्थितियों के बीच में, मुसीबत के बीच में, फिर भी वह अंतर्निहित धारा हो सकती है, चाहे सतह पर पानी कितना भी अशांत हो, वह अंतर्निहित आनंद की धारा हो सकती है। मैं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ, मैं जानता हूँ वह कौन है, और मैं जानता हूँ कि मेरी नियति क्या है। यही खुशी का कारण है।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। श्लोक 22 किस शब्द से शुरू होता है? इसलिए। अब वह संकेत कारण और प्रभाव है।

यहाँ कारण पहले आया है, और प्रभाव। तो भगवान के संवेदनशीलता के वादे, भगवान के आनंद के वादे, भगवान के वादे कि निर्दयी नष्ट हो जाएंगे, का क्या प्रभाव होने वाला है? उसका क्या प्रभाव है? श्लोक 21. अच्छे लोग यह नहीं देखेंगे कि उन्हें मूल रूप से त्याग दिया गया है।

यह सही है। याकूब को अब और लज्जित नहीं होना पड़ेगा। याद रखें कि मैंने आपसे कई बार क्या कहा है।

शर्म एक असफल भरोसे का परिणाम है। यदि आप किसी चीज़ पर भरोसा करते हैं और वह विफल हो जाती है, तो आप शर्मिदा होते हैं, आप अपमानित होते हैं। और इसलिए जब पुराना

नियम विशेष रूप से आपके बारे में बात करता है कि आप अब शर्मिंदा नहीं होंगे, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप भगवान से शर्मिंदा नहीं होंगे या आप इस पर शर्मिंदा नहीं होंगे।

इसका मतलब है कि आपकी बदनामी नहीं होगी. तुम यहोवा पर भरोसा रखोगे, मूर्तियों पर नहीं। आप झूठे शत्रु राष्ट्रों पर नहीं, बल्कि प्रभु पर भरोसा करेंगे।

आप प्रभु पर भरोसा रखेंगे और आपका भरोसा आपको निराश नहीं करेगा। और उस सच्चे विश्वास का प्रमाण क्या होगा? आप क्या देखोगे? पद 23. उसके हाथों का काम, और वह क्या होगा? सबसे पहली पंक्ति.

उनके बच्चे। युद्ध की भयावहता आज भी वैसी ही है। लेकिन यह तब विशेष रूप से सच था।

ये बच्चे ही थे जो नष्ट हो गए. ये बच्चे ही थे जो पीड़ित हुए और गायब हो गए। और पुस्तक में चलने वाले विषयों में से एक यह है कि इज़राइल एक विधवा महिला होगी जिसके सभी बच्चे मारे गए हैं।

वह उस तरफ है. लेकिन इस तरफ, आह, लेकिन वह दिन आएगा जब आप अपने बच्चों की गिनती भी नहीं कर पाएंगे। और फिर, ऐतिहासिक रूप से ऐसा कोई कारण नहीं है कि यहूदी लोग आज भी अस्तित्व में रहें।

यदि आप केवल इतिहास पर नजर डालें तो यहूदियों को लगभग 1500 वर्ष पहले ही खत्म कर दिया जाना चाहिए था। लोग उन्हें हमेशा के लिए खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। भगवान ने अपना वादा निभाया है.

हाँ। हो सकता है। मैंने वह कहानी नहीं सुनी थी.

लेकिन यह निश्चित रूप से सच है कि यदि यहूदी लोगों पर नरसंहार नहीं किया गया होता तो इज़राइल राज्य लगभग निश्चित रूप से अस्तित्व में नहीं होता। यूरोपीय राष्ट्र इतने शर्मिंदा थे, वे अपने किए से इतने सदमे में थे कि उन्होंने इज़राइल राज्य के गठन की अनुमति दे दी जिसे वे 50 वर्षों से करने से बिल्कुल इनकार कर रहे थे। इसलिए, यह दिलचस्प है कि वास्तव में उन्हें खत्म करने की हिटलर की कोशिश ने उन्हें एक राष्ट्रीय राज्य दे दिया।

इसलिए, मैं बस इतना कहता हूँ कि ये वादे किए गए हैं और किए जा रहे हैं और मुझे विश्वास है कि ये पूरे होते रहेंगे। और फिर, श्लोक 23 में इन वादों के पूरा होने के आलोक में वे क्या करेंगे? वे क्या करेंगे? वे परमेश्वर के नाम को पवित्र करेंगे। यह संस्करण कहता है कि वे भगवान के नाम को पवित्र करेंगे।

अब तुम संसार में परमेश्वर का नाम कैसे पवित्र करते हो? यह पहले से ही पवित्र है, है ना? आप इसे कैसे पवित्र करते हैं? जब आप किसी चीज़ को पवित्र करते हैं तो आप क्या करते हैं? आप अपने कार्यों में इसका सम्मान करते हैं। आपने इसे अलग कर दिया. आप सचमुच कहते हैं कि प्रतिष्ठा और चरित्र, अर्थात् नाम, सबसे पवित्र हैं।

परमेश्वर की प्रतिष्ठा और चरित्र से अधिक पवित्र कुछ भी नहीं है। इस दुनिया के देवता, इस दुनिया की प्राकृतिक ताकतें, वे खेल में भी नहीं हैं। वह एकमात्र व्यक्ति है जिसे पवित्र कहलाने का अधिकार है और वह इसे हमारे साथ साझा करना चाहता है।

ठीक है, एक बार फिर श्लोक 24 को देखें। यहाँ है, यहाँ यह है, यह विषय है। नेतृत्व नशे में, अंधा और बहरा है, लेकिन भगवान वादा करते हैं कि भले ही नेतृत्व ने लोगों को उसी नशे और अंधेपन और बहरेपन में ले जाया है, वह अपने लोगों को वहाँ नहीं छोड़ने जा रहा है।

जो लोग आत्मा में भटक जाते हैं, वे इसे समझ लेंगे। जो कुड़कुड़ाते हैं वे शिक्षा ग्रहण करेंगे। अच्छी खबर।

ठीक है, तो सबसे पहले धिक्कार है, उत्तरी राज्य एप्रैम के शराबी नेताओं। दूसरा दुःख, यरूशलेम के शराबी नेता। तीसरा दुःख, जो लोग अपनी सलाह, अपनी राजनीतिक सलाह को भगवान से छिपाने की कोशिश करते हैं।

अब यहां हम अध्याय 30 में चौथे दुःख पर आते हैं। ये लोग क्या कर रहे हैं? अपने तरीके से जा रहे हैं और वह कौन सा रास्ता है? यह विनाश का रास्ता है, यह विद्रोह का रास्ता है और आइए इससे भी अधिक निश्चित हो जाएं। वे क्या करने की सलाह दे रहे हैं? उनकी सलाह, अब हम यहाँ आए हैं, यह कौन सी सलाह है जिसे वे भगवान से छिपाने की कोशिश कर रहे हैं? हमें मिस्र के साथ गठबंधन बनाना चाहिए।

याद रखें कि मैंने क्या कहा है, यह लगभग 710 और 700 ईसा पूर्व के बीच की बात है। अशशूर ने बाकी सभी को हरा दिया है। वे तट के नीचे अभियान चला रहे हैं।

वे फ़िलिस्ती शहरों पर हमला कर रहे हैं और अगला पड़ाव मिस्र है। लेकिन समस्या यह है कि यहूदा यहाँ उनके पीछे की पहाड़ियों में है। यह जानते हुए कि यहूदा वहाँ है और उनकी आपूर्ति लाइनों को काटने में सक्षम है, वे मिस्र पर हमला नहीं कर सकते।

इसलिए मिस्र के अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने से पहले उन्हें किसी न किसी तरह यहूदा से निपटना होगा। और यहूदी कह रहे हैं, हम जानते हैं, हम उनकी नज़र में हैं, हम अगले हैं। हम क्या करने जा रहे हैं? और सलाहकार कह रहे हैं, यह स्पष्ट है, हम मिस्रवासियों के साथ एक सौदा करते हैं।

और जाहिर है, मिस्रवासी ऐसा सौदा करके खुश थे। वे यह सोचकर प्रसन्न हुए कि यहूदा अशशूर के पीछे है। और यदि मिस्रवासी उनकी मदद कर सकते हैं और उन्हें सहारा देकर रख सकते हैं, तो इसका मतलब है कि मिस्र के पास कुछ और वर्षों की राहत है।

तो हम यहाँ हैं। 30 पद 1 के अनुसार उनकी योजना में क्या समस्या है? यह प्रभु की योजना नहीं है। और श्लोक 2 को फिर से देखें। उन्होंने क्या नहीं माँगा? उन्होंने प्रभु से दिशा-निर्देश नहीं माँगा।

बिल्कुल। तो फिर, उन्होंने क्या गलत किया है? अब मैंने यहां कहा कि प्रत्यक्ष में मत फंसो। उन्होंने क्या गलत किया है? ठीक है, उन्हें मिस्र की ताकत पर भरोसा था, लेकिन इन छंदों के अनुसार इसमें गलत क्या था? उन्होंने इस कार्य के बारे में परमेश्वर से नहीं पूछा।

इसमें यही गलत था. संभावित रूप से, परमेश्वर उनकी रक्षा के लिए मिस्र का उपयोग कर सकता था। लेकिन उसने क्या उपयोग किया? बाद में उन्होंने साइरस का इस्तेमाल किया.

साइरस आस्तिक नहीं था. तो संभावित रूप से, भगवान कह सकते थे, ठीक है मेरे बच्चों, मैं चाहता हूँ कि तुम मिस्र के साथ गठबंधन करो। अब यह बहुत असंभावित लगता है क्योंकि वे अविश्वासी थे।

लेकिन मुद्दा यह है कि उन्होंने मन बना लिया है कि भगवान से पूछे बिना क्या करना है। मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन मैं वहां गया हूँ। और यह रहने के लिए अच्छी जगह नहीं है.

लेकिन फिर भी, इस्राएलियों पर नाक-भों सिकोड़ना बेहद आसान है। मेरी, मेरी, वे ऐसी मूर्खतापूर्ण बात कैसे कर सकते हैं? और भगवान कहते हैं, तुम दर्पण में देखने का प्रयास क्यों नहीं करते? मेरा मतलब है कि जब खतरा हमारे ऊपर होता है, जब हर तरफ खतरा होता है, तो यह कहना बहुत आसान होता है, अच्छा बेटा, मैं यह कर सकता हूँ या मैं वह कर सकता हूँ या मैं वह कर सकता हूँ। मुझे लगता है कि शायद यही करने की बात है।

हाँ, हम ऐसा करेंगे। यह कहने के बजाय, हे भगवान, आप क्या करना चाहते हैं? यहाँ आपकी क्या सलाह है? क्योंकि समस्याओं में से एक यह है कि भगवान आमतौर पर उत्तर देने में बहुत धीमे होते हैं। भगवान, आप जानते हैं, मैं अब और इंतजार नहीं कर सकता, यहां मेरी मदद करें।

आपको ऐसा क्यों लगता है कि यह सच है? तुम मुझसे आगे हो. क्योंकि हम वहीं जा रहे हैं। हम वहीं जा रहे हैं.

लेकिन मैं इस पर कुछ कहूंगा और बाद में फिर से कहूंगा। क्योंकि पुनरावृत्ति ही शिक्षा की आत्मा है? हाँ, वैसे भी, क्योंकि हमें अपने संसाधनों के अंत पर आना होगा। हमें समस्या को स्वयं हल करने की अपनी क्षमता के अंत तक पहुंचना होगा।

और हममें से कुछ लोग जो इसमें बहुत अच्छे हैं उन्हें लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है क्योंकि संसाधनों को खत्म होने में अधिक समय लगता है। लेकिन बिल्कुल यही है. भगवान कहते हैं कि हमें तब तक इंतजार करना होगा जब तक आप ऐसा नहीं कर सकते।

और फिर जब ऐसा होता है, तो आप जानते हैं कि यह प्रभु था। अन्यथा, हमारे लिए यह कहना वास्तव में बहुत आसान है कि समस्या कब हल हो जाएगी, ओह, ठीक है, हाँ, हाँ, आपको बस यह जानना होगा कि आप क्या कर रहे हैं। और यही मूसा के साथ हुआ, संख्या 20।

यहोवा ने जो किया उसका श्रेय उसने लिया। याद रखें, लोग, मेरा मतलब है, यह अब दूसरी पीढ़ी है। और उन्होंने अपने माता-पिता से अच्छी तरह सीखा।

वे बड़बड़ा रहे हैं. हमारे यहां पानी नहीं है. वे अपने रास्ते पर हैं.

वे जेरिको की ओर जा रहे हैं। हमारे यहां पानी नहीं है. मूसा, तू हमें मार डालने के लिये यहां लाया है।

बस यही उनके माता-पिता ने कहा था। और मूसा और हारून बहुत अच्छी शुरुआत करते हैं। वे तम्बू में जाते हैं.

वे परमेश्वर के साम्हने मुंह के बल गिर पड़ते हैं, और कहते हैं, हे परमेश्वर, हम इस विषय में क्या करें? और भगवान कहते हैं कि यह कोई समस्या नहीं है। वहाँ एक बड़ी चट्टान है. बस बाहर जाओ और उससे बात करो, और पानी निकल आएगा।

और मूसा तम्बू के द्वार से बाहर आता है, और वह कहता है, अब यहाँ, हे विद्रोहियों, क्या हमें तुम्हारे लिये जल लाना चाहिए? और तुम कहते हो, ओह, नहीं, मूसा। नहीं, नहीं, नहीं। इसे देखो।

और मूसा लाठी ले लेता है। मुझे यकीन है कि हममें से कुछ अन्य लोगों की तरह वह भी बाएं हाथ का था। और वह लाठी, वह लाठी जिसने नील नदी को रक्त में बदल दिया, वह लाठी जिसने मिस्र के आकाश को टिड्डियों से भर दिया, वह लाठी जिसने समुद्र को विभाजित कर दिया, वह लाठी, इसे देखो, धमाका, धमाका, छप।

और ब्रह्माण्ड के किनारे से एक छोटी सी आवाज निकलती है, कहती है, मूसा, तुमने मेरा नाम पवित्र नहीं किया। मूसा, आपके पास ईश्वर को अच्छा दिखाने का, यह दिखाने का कि वह पवित्र है, एक शानदार मौका था और आपने उस अवसर का उपयोग खुद को अच्छा दिखाने के लिए किया। यह प्रश्न का एक लंबा उत्तर है, लेकिन यह इसी बारे में है।

भगवान को हमें उस स्थान पर लाना है जहां जब समस्या हल हो जाती है, तो इसका श्रेय लेने का कोई तरीका नहीं है। ठीक है। उत्साह से आगे बढ़ते रहना।

अब, अध्याय 30 के छंद 6 और 7। हमने यशायाह में पहले भी इस तरह की चीज़ का सामना किया है। क्या किसी को याद है कि मैंने इसे क्या कहा था? यह एक संक्रमण है.

मम-हम्म. यह एक संक्रमण है. मम-हम्म.

यह एक संक्रमण है. इसके विपरीत संक्रमण, हाँ। एक ग्राफिक चित्रण.

आप जो कह रहे हैं उसका समर्थन करने के लिए एक चित्र का उपयोग करें। और यहाँ की तस्वीर दिलचस्प है. नेगेव वास्तव में एक हिब्रू शब्द है जिसका अर्थ साउथलैंड है।

नेगेव नेगेव के दक्षिण की भूमि है। सिनाई प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में यहूदा के दक्षिण में। नेगेव यहाँ है.



अब, चित्र क्या है? वैसे भी यहाँ क्या चल रहा है? वे मिस्र को श्रद्धांजलि दे रहे हैं। और वे इसे उन तक कैसे ले जा रहे हैं? यह कैसी यात्रा है? वे इसे गधों की पीठ पर लादकर ले जा रहे हैं। और वे किस प्रकार के क्षेत्र से होकर गुजर रहे हैं? श्लोक 6. खतरनाक, विश्वासघाती, शेरनी और सिंह, योजक और उड़ने वाला साँप।

हां, मुझे संदेह है कि क्या हो रहा है, यरूशलेम से सामान्य मार्ग, हां नहीं, यरूशलेम से नीचे लाकीश तक है और फिर तटीय सड़क पर और नीचे है। 10 या 11 दिन की बहुत आसान यात्रा। लेकिन, यहाँ तट पर कौन है? असीरियन सेना।

इसलिए, मिस्र तक पहुंचने के लिए, उन्हें वहां तक पहुंचने के लिए सभी खतरों के साथ जंगल से होकर गुजरना होगा। दुनिया पर भरोसा करना कितना मूर्खतापूर्ण है इसका एक ग्राफिक चित्रण। यह कितना महंगा, कितना खतरनाक और अंततः कितना निरर्थक है।

हम किस प्रकार की व्यर्थ चीजों पर अपना बहुमूल्य खज़ाना खर्च करने के लिए प्रलोभित होते हैं? बुद्धिमत्ता, हाँ. सभी प्रकार की चीजें हम अपने साथ नहीं ले जा सकते। बैंक विफल होने के लिए बहुत बड़े हैं।

हाँ। एहसान, हाँ, हाँ. अब, मेरे पास बीमा है, इसलिए।

लेकिन बीमा? सेवानिवृत्ति? उपदेश देना और हस्तक्षेप करना बंद नहीं करता। पद? अब फिर, ये चीजें अपने आप में बुरी नहीं हैं, लेकिन मुद्दा यह है कि जब ये ईश्वर में वास्तविक विश्वास का स्थान ले लेती हैं। अपना पैसा और अपना जीवन उन चीजों पर खर्च करना बहुत आसान है जो अंततः उतना उत्पादन नहीं कर पाते जितना वे उत्पादन करने का दावा करते हैं।

ठीक है, आगे बढ़ाओ। श्लोक 1 में, उन्हें जिद्दी बच्चे कहा गया था। अब श्लोक 2, श्लोक 9 में, वे विद्रोही लोग हैं, झूठ बोलने वाले बच्चे हैं, ऐसे बच्चे हैं जो टोरा, प्रभु की शिक्षा को सुनने को तैयार नहीं हैं।

आपको क्या लगता है कि भगवान यहाँ विशेष रूप से उन्हें विद्रोही बच्चे क्यों कह रहे हैं? इस संदर्भ में बच्चों के रूपक और विद्रोही बच्चों का उपयोग क्यों करें? बच्चों में न सुनने की प्रवृत्ति होती है। अपरिपक्व, जवाबदेह नहीं ठहराया जाना चाहता। उन्होंने उसके साथ वाचा बान्धी थी, वे धोखेबाज थे।

ऐसा लगता है जैसे उन्होंने कभी सीखा ही नहीं। हां हां। वे हमेशा नहीं सुन रहे थे।

फिर से, आप देखिए, हम इन सलाहकारों के बारे में बात कर रहे हैं जो इतने सूक्ष्म और बहुत चतुर हैं, जो सभी अंदर और बाहर जानते हैं। भगवान कहते हैं कि तुम बच्चों का एक समूह हो। तुम्हें लगता है कि तुम बहुत बुद्धिमान हो।

तुम्हें लगता है कि तुमने सब कुछ समझ लिया है, और तुम सिर्फ बच्चे हो। और श्लोक 9 के अनुसार जो बच्चे क्या नहीं करेंगे? वे नहीं सुनेंगे क्या? टोरा, ईश्वर का निर्देश। याद रखें, मुझे लगता है कि कानून के साथ हमारे दुर्भाग्यपूर्ण अर्थों के कारण यह बेहद महत्वपूर्ण है।

कानून कुछ ऐसा है जो आपको रोकता है, जो आपको सीमित करता है, जो आपको बंद कर देता है। लेकिन टोरा शब्द, हिब्रू शब्द टोरा, वास्तव में निर्देश का अर्थ है। और निर्देश के बहुत भिन्न अर्थ होते हैं, है न? भगवान मुझे बंद करने की कोशिश नहीं कर रहा है।

ईश्वर मेरे विकल्पों को सीमित करने का प्रयास नहीं कर रहा है। भगवान यह कहना चाह रहे हैं कि तुम्हें इसी तरह बनाया गया है। इस तरह चलो तो जीवन चलेगा।

उस रास्ते पर चलो तो जीवन नहीं चलेगा। और ऐसा प्रतीत होता है कि हम इसे अपने दिमाग से समझ नहीं पा रहे हैं। हम बीजगणित सीख सकते हैं, लेकिन हम अब भी सोचते हैं कि व्यभिचार हमें खुश करेगा।

तो वे बच्चे हैं जो सीखेंगे नहीं। याद रखें, अध्याय 28 में? खैर, मुझे लगता है कि मुझे बस आपको उन लोगों के बारे में निर्देश देना होगा जो अजीब भाषा बोलते हैं। सीओवी, वी'कोव, लव, वी'एलएवी, लाइन पर लाइन, सिद्धांत पर सिद्धांत, क्योंकि आप बहुत सुस्त लगते हैं।

और यहाँ यह फिर से है. अंततः विद्रोह बचकाना है। हम बहुत बड़ा और शक्तिशाली महसूस करते हैं, और मैं इसे स्वयं बना सकता हूँ।

मुझे वह नहीं करना है जो आप कहते हैं। और भगवान कहते हैं, नहीं, तुम फिर से जाओ, एक बच्चे की तरह अभिनय करो। तो फिर, श्लोक 10, 11, और 12 मेरे कुछ पसंदीदा हैं।

वे अपने प्रचारकों से क्या कहते हैं? पाप के बारे में हमसे बात मत करो. चिकनी-चुपड़ी बातों की भविष्यवाणी करो. भ्रम बोलो.

रास्ता छोड़ो. रास्ते से हट जाओ. और फिर यह आखिरी पंक्ति.

आइए हम इस्राएल के पवित्र के बारे में और न सुनें। यशायाह, क्या तुम चुप रहोगे? हर समय आप इस्राएल के इस पवित्र व्यक्ति के बारे में निंदा करते रहते हैं। हम उससे तंग आकर मर चुके हैं।

वह हमारे बारे में कभी कुछ अच्छा नहीं कहते। तो, यशायाह की प्रतिक्रिया क्या है? पद 12. वह कहता है, पाप के विषय में हम से चर्चा न करो।

इस्राएल के पवित्र के बारे में और अधिक भविष्यवाणी न करें। इसलिये इस्राएल का पवित्र यों कहता है। आप उसके बारे में और कुछ नहीं सुनना चाहते थे? आइए आपको बताते हैं कि इस बारे में उनका क्या कहना है।

क्योंकि आप घृणा करते हैं, आप सोचते हैं कि यह बेकार है, यह शब्द, और उत्पीड़न और विकृति पर भरोसा करते हैं। मुझे लगता है कि वह मिस्र के बारे में बात कर रहे हैं। मुझे लगता है कि उत्पीड़न और विकृति, मुझे लगता है, मिस्र का पर्याय है।

मुझे इस पर यकीन नहीं है. हो सकता है कि वे सचमुच अपने ही उत्पीड़न और विकृति पर भरोसा कर रहे हों। लेकिन किसी भी स्थिति में, वे ग़लत चीज़ पर भरोसा कर रहे हैं।

अब यहाँ एक अच्छा, अच्छा उदाहरण है। श्लोक 12 और श्लोक 13 के बीच क्या संबंध है? साहित्यिक संबंध. वाह! उस महिला को एक स्वर्ण सितारा दो।

हाँ। क्योंकि तुम ने इस वचन का तिरस्कार किया है, इसलिये सचमुच यह अधर्म तुम्हारे लिये ऊंची भीत में बाहर की ओर निकली हुई दरार के समान होगा। बहुत खूब।

यहाँ दीवार है. इनमें से एक दिन, यह बच्चा नीचे आ रहा है। आप बस यह नहीं जानते कि कब।

क्या आपने विकृति और अत्याचार पर भरोसा किया? ठीक है। ठीक है। आप इसे तब प्राप्त करने जा रहे हैं।

आप उस पर भरोसा रखें. वह नीचे आ रहा है. श्लोक 14.

कुम्हार के बर्तन को तोड़कर वह क्या, क्या, क्या मतलब निकालना चाह रहा है? वह छवि आपके मन में क्या अर्थ लाती है? आप इसे वापस एक साथ नहीं रख सकते. यह किसी काम का नहीं। क्या कुम्हार का बर्तन धीरे-धीरे टूटता है? उह उह।

टकराना! और वो गया। और एक पतला मिट्टी का बर्तन, कितने टुकड़ों में टूट गया? कम से कम दो। हाँ।

यह बिखर जाता है. और फिर, यही वह कल्पना है जिसे यशायाह यहां लाने की कोशिश कर रहा है। तुम्हें पता है, वह बस इतना कह सकता है, इसके कारण, तुम्हें अपने पाप का फल मिलेगा।

चर्चा का अंत। लेकिन नहीं, वह इस प्रकार की कल्पना का उपयोग करता है। यह एक उभरी हुई दीवार की तरह होगी जो एक दिन ढह जायेगी।

यह उस कुम्हार के बर्तन की तरह होगा जो एक पल में टूट जाता है और हजारों टुकड़ों में टूट जाता है। कोई भी टुकड़ा इतना बड़ा नहीं कि उसका किसी भी काम में उपयोग किया जा सके। इतना बड़ा भी नहीं कि राख उठाने या पानी की एक बूंद डालने के लिए छोटे स्कूप के रूप में उपयोग किया जा सके।

ठीक है। जोर लगाओ। तो, इसका मतलब क्या है? प्रभु की सलाह क्या है? श्लोक 15.

यह सही है। लौटने में मुझ पर विश्वास करो। आप जिस रास्ते पर चल रहे हैं उसी रास्ते से पीछे मुड़ें।

घूमो और मुझमें विश्राम करो। शांति और विश्वास ही आपकी ताकत होगी। लेकिन उनकी प्रतिक्रिया क्या है? नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते।

मेरा मतलब है, हे यहोवा, यह यहाँ एक संकट है। लगता है आप समझ नहीं पा रहे हैं। हमारे पास केवल कुछ दिन या महीने हैं।

हमें अब कार्रवाई करनी होगी। अब, याद रखें कि इस बिंदु पर, घोड़ा और घोड़ा और रथ ही अंतिम हथियार हैं। घोड़ा और रथ जा चुके थे, और ठीक इसी समय, घुड़सवार सेना अंदर आ रही थी।

लोग युद्ध में घोड़ों की सवारी करना सीख रहे थे और एक घुड़सवार सेना लगभग, लगभग, आप उससे बचाव नहीं कर सकते थे। तो, हम घोड़े लाएँगे ताकि हम तेज़ सवारी कर सकें। और भगवान क्या कहते हैं? हाँ, आपको उन शत्रुओं से बचने के लिए तेज़ घोड़ों की आवश्यकता होगी जो आपसे तेज़ हैं।

जॉन, यह एक तरह से चौंकाने वाला है, मैंने ऐसी कई जगहें नहीं देखीं जहां आपकी प्रतिक्रिया हो, नहीं। इस तरह की प्रतिक्रिया आपको बहुत कम ही देखने को मिलती है। हां।

इतना ही। और अंग्रेजी में यह 'नहीं' जैसा है। हिब्रू शब्द है लो।

लो. नहीं। इसमें भी अच्छा नहीं है।

नहीं. ठीक है. अब, यहाँ श्लोक 18 है।

श्लोक 18 में पहला शब्द क्या है? तो, इसलिए, हमें क्या दे रहा है? किसी पूर्व कारण का प्रभाव। तो, ये लोग, भगवान ने कहा है, अब आपको यही करना है। आपको बस पीछे हटने, बस आराम करने और इस समस्या को हल करने के लिए मुझ पर भरोसा करने की जरूरत है।

वे कहते हैं, नहीं. हम इसे अपने तरीके से हल करेंगे। हम सैन्य हार्डवेयर खरीदने जा रहे हैं और हम इस चीज़ को अपने तरीके से हल करने जा रहे हैं।

तो, उनके द्वारा परमेश्वर की सलाह को अस्वीकार करने का क्या प्रभाव पड़ता है? यह आश्चर्यजनक है. प्रभाव क्या है? दया दिखाओ। दया दिखाओ।

दया दिखाओ। प्रभु प्रतीक्षा करेंगे. तुम प्रभु की प्रतीक्षा नहीं करोगे, इसलिए प्रभु तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।

और वह दया दिखाने की प्रतीक्षा करेगा। भगवान कहते हैं, मुझे अब आप पर दया दिखाना अच्छा लगेगा, लेकिन आप इसे प्राप्त नहीं कर सकते। इससे पहले कि आप यह कहने के लिए तैयार हों कि, भगवान, मैं यह नहीं कर सकता, आपको दीवार के पास जाना होगा।

मुझे आपकी दया चाहिए। भगवान कहते हैं, मैं तुम्हें दीवार पर नहीं भेजना चाहता। मैं आपके साथ ये भयानक चीजें घटित होते नहीं देखना चाहता।

लेकिन यदि तुम मेरी ओर वापस नहीं लौटोगे, तो तुम्हारे पास अपनी पसंद का फल भोगने के अलावा और कुछ नहीं है। आपमें से जो लोग माता-पिता हैं या रहे हैं, वे जानते हैं कि अपने बच्चे को उसकी पसंद के अनुसार परिणाम देना दुनिया के सबसे कठिन कामों में से एक है। वे रो रहे हैं, उन्हें दर्द हो रहा है, और एक प्यार करने वाले माता-पिता के रूप में आपमें सब कुछ कहता है, नहीं, नहीं, मैं आपको उन परिणामों से मुक्ति दिलाऊंगा।

कई बार यह सबसे बुरी चीज़ होती है जो हम कर सकते हैं। हमें उन्हें उनकी पसंद के परिणामों का अनुभव करने देना होगा। और भगवान यहाँ यही कर रहा है।

धन्य हैं वे सभी जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं। श्लोक 18. उत्तम वचन, उत्तम वचन.

प्रभु की प्रतीक्षा करो. और जैसा कि हमने पहले भी कई बार कहा है, हमारे पास इसे फिर से कहने का अवसर है। हमें अपने दिमाग में यह स्पष्ट करने की जरूरत है कि इंतजार करना भरोसे पर पैर रखने जैसा है।

विश्वास कहना आसान शब्द है। अरे हाँ, मुझे तुम पर भरोसा है। और भगवान कहते हैं, ठीक है, यदि तुम ऐसा करते हो, तो इधर-उधर भागना बंद करो और अपनी समस्याओं को स्वयं ही सुलझाओ।

अब मैं बस, मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ, हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने और ईश्वर के कुछ करने का इंतजार करने की बात नहीं कर रहे हैं। लेकिन प्रतीक्षा करना सक्रिय रूप से उसके साथ एक रिश्ते में रहना है और कहना है, हे भगवान, आप यहां क्या करना चाहते हैं? आप मेरी क्षमता का उपयोग कैसे करना चाहते हैं? आप मेरे संसाधनों का उपयोग कैसे करना चाहते हैं? लेकिन लड़के, हे लड़के, चर्च में पादरी बनने के मेरे सीमित अनुभव में यह मेरे लिए आकर्षक है अगर आप चर्च प्रशासनिक बोर्ड से कहें, तो मुझे लगता है कि हमें इस समस्या को हल करने के लिए बस भगवान की प्रतीक्षा करने की जरूरत है। आपके पास कट्टर व्यापारियों और महिलाओं का एक समूह खड़ा होगा और कहेंगे, उपदेशक, बैठ जाओ।

तुम उपदेश का काम करो, हम जीवन का काम करेंगे। लेकिन वास्तव में, एक समूह के रूप में, उस स्थान पर आने के लिए पर्याप्त समय व्यतीत करें जहां एक समूह के रूप में हमारे पास पूरे दिल से सहमति हो, इस स्थिति में प्रभु यही करना चाहते हैं। हे भगवान, जब ऐसा होता है, तो आप गैंगबस्टर्स की तरह आगे बढ़ सकते हैं और कोई भी आपको रोक नहीं सकता।

लेकिन अधिकांश समय हम संसदीय प्रक्रिया से चलते हैं और आपको 51-49 वोट और बाय-जिंगल्स मिलते हैं, हम यही करने जा रहे हैं। खैर, मैं उस पर कैसे उतर आया? वैसे भी, यहाँ फिर से वादा आता है। पद 20 को देखो।

मुझे लगता है यह बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, यदि आप भगवान पर भरोसा करते हैं, तो आपको कोई परेशानी या कोई समस्या नहीं होगी। क्या श्लोक 20 यही कहता है? नहीं।

यद्यपि प्रभु तुम्हें विपत्ति की रोटी और क्लेश का जल, अर्थात् शुभ समाचार देता है, तौभी तुम्हारा गुरू फिर अपने आप को छिपा न पाएगा। आपकी आँखें आपके शिक्षक को देखेंगी। तुम्हारे कान तुम्हारे पीछे से यह कहते हुए सुनेंगे, कि मार्ग यही है, जब तुम दाहिनी ओर मुड़ो या बाईं ओर मुड़ो तो इसी में चलो।

हां हां। ओह, यदि आपकी आँखें प्रभु पर खुली हैं और आपका पवित्र आत्मा के साथ एक साफ़, स्पष्ट रिश्ता है और आप उस कोमल फुसफुसाहट को सुन सकते हैं, तो आप लगभग किसी भी चीज़ का सामना कर सकते हैं। पवित्र आत्मा चिल्लाने के व्यवसाय में नहीं है।

वह चिल्लाने के व्यवसाय में नहीं है। और फिर, हमारा अधिकांश जीवन बहुत अधिक शोर से भरा है। मेरा अभिप्राय रेडियो या टीवी से नहीं है।

मेरा मतलब शोर से है। लेकिन हम वह नहीं सुन सकते जो वह कहना चाह रहा है। वहाँ पर्याप्त शांति नहीं है।

पर्याप्त आराम नहीं है। और इसलिए, शांत आवाज़ अनसुनी है। वह यही करना चाहता है।

मैं अक्सर सोचता हूँ कि घुड़सवार या घुड़सवार महिला को ऐसा घोड़ा नहीं चाहिए जहाँ आपको घोड़े को वह करने के लिए थोड़ा सा देखना पड़े जो उसे करना चाहिए। आप वास्तव में जो चाहते हैं वह घोड़ा है जहाँ आपको बस उसकी गर्दन के किनारे पर लगाम रखनी है। पवित्र आत्मा आपके और मेरे साथ यही करना चाहता है।

जॉन, उस तरह. हाँ। काश मैं आपसे कह पाता कि यह मेरी चाल की 100% विशेषता है और ऐसा नहीं है।

लेकिन यही मेरा लक्ष्य है। वह मेरा लक्ष्य है। मुझे लगता है कि हम कुछ विशेष चीज़ों जैसे द्विध्रुवी और उन सभी चीज़ों के बारे में बात कर रहे हैं।

लेकिन आप इस बारे में बात कर रहे हैं कि हम उनमें से कुछ को कैसे रोक नहीं सकते। जब आप इसे जीवन और अवसाद और जो भी हो, में डालते हैं। वह कह रहा था, हमें शांति चाहिए।

और हमें नींद की जरूरत है। और एक प्रश्न यह था कि जब हम सोते हैं तो रेडियो बजाने के बारे में क्या ख्याल है? और उन्होंने कहा, बिल्कुल इसलिए क्योंकि आपका मस्तिष्क आवाज सुनने के लिए प्रशिक्षित है।

आपने अब कहा, हल्का संगीत उतना विघटनकारी नहीं है, लेकिन अगर आपके पास संगीत है, मेरा मतलब है, गायन या कुछ और के साथ आवाज का खेल, तो आपका मस्तिष्क आनुवंशिक रूप से उसी के अनुरूप होता है। तो यह वैसा नहीं है जैसा आप कह रहे हैं। भले ही हम सोचते हैं कि हम सुन रहे हैं, कभी-कभी हमारा मस्तिष्क नहीं सुनता, मेरा मतलब है, मैं यह भी सोच सकता हूँ कि मैं प्रार्थना कर रहा हूँ और मैं कुछ के बारे में सोच रहा हूँ।

हाँ, वहाँ 40 या 50 अलग-अलग आवाज़ें बात कर रही हैं, और हम उनमें से किसी एक और आत्मा की आवाज़ को जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भले ही हम सो रहे हैं, हाँ, यह आकर्षक है। ठीक है, तो वादा.

फिर से, एक ग्राफिक चित्रण, श्लोक 23 से 26। बीज के लिए बारिश, पशुधन बड़े चरागाहों में चरेंगे। पर्वतों की चोटियों पर झरने भी फूट पड़ेंगे।

और यह भाषा वैसी ही है जैसी हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाते हैं। सूर्य और चंद्रमा का प्रकाश. तो फिर अंत में अध्याय 30, श्लोक 27 से 33 तक, अध्याय के अंत में, असीरियन सेना के विनाश की एक तस्वीर है।

और उसमें, ध्यान दें कि लोग, ऐसा लगता है मानो वे कोई पवित्र त्योहार मना रहे हों। पद 29, रात को तुम गीत गाओगे जैसे कोई पवित्र पर्व मनाया जाता है और हृदय प्रसन्न होगा। श्लोक 30, प्रभु अपनी राजसी आवाज सुनाएंगे और अपनी भुजा का गिरता हुआ झटका दिखाई देंगे।

अशशूरी आतंक से त्रस्त हो जायेंगे। पद 31, पद 32 से नीचे, नियुक्त छड़ी का प्रत्येक आघात जो प्रभु उन पर रखेगा वह डफ और वीणा की ध्वनि के समान होगा। अब, इस पवित्र त्योहार का अशशूरियों के विनाश से क्या संबंध है? क्या यह 185,000 की बात कर रहा है? ओह, मुझे लगता है कि यह है, मुझे लगता है कि यह है।

भगवान यहां तेजी से जो बात कह रहे हैं वह यह है कि मैं उनकी देखभाल करने जा रहा हूँ। आपको उनकी देखभाल करने की ज़रूरत नहीं है, मैं जा रहा हूँ। अब, उसने हर जगह ऐसा नहीं किया, वह हर बार ऐसा नहीं करता।

उसके पास बोरियत की सीमा बहुत कम है। वह एक ही काम को दो बार करना पसंद नहीं करते। लेकिन इस बार, वह यही करने जा रहा था।

इसलिए हां। हालाँकि, यह धार्मिक त्योहार की भाषा उससे क्यों जुड़ी है? ठीक है। पूजा करना।

यह मान्यता कि ईश्वर ने ऐसा किया है। फिर पूजा का कारण है. यह प्रार्थना का परिणाम था, है ना? मम-हम्म, मम-हम्म, यह प्रार्थना का परिणाम था।

हिजकिय्याह, ठीक है? हाँ, और हिजकिय्याह, दोनों। कई बार, भगवान की हमारी पूजा में बाधा आती है क्योंकि हमने इसे स्वयं किया है और उसे अपनी शक्ति प्रदर्शित करने का मौका नहीं

दिया है। हम अपनी समस्याओं को हल करने में इतने अच्छे हैं कि भगवान के लिए कार्य करने के लिए कोई जगह नहीं है, और इस प्रकार, उसने जो किया है उसके लिए उसकी पूजा करने का कोई अवसर नहीं है।

और सबसे पहले उसने मुझे प्रभावित किया। वह बहुत दिलचस्प विचार था। मैंने आराधना के कितने अवसर गँवा दिए हैं क्योंकि मैंने प्रभु को अपने तरीके से कार्य करने और महिमा प्राप्त करने की अनुमति नहीं दी है? मुझे इसे अपने तरीके से करना था, इसलिए भगवान के लिए महिमा के लिए कोई जगह नहीं थी।

मैं समस्या-समाधान में बहुत अच्छा हूँ, है ना? मैं यहां यह भी देख रहा हूँ कि थोड़ा सा है, वह कह रहा है, मैं आपसे मिलने आऊंगा। हम और आप एक साथ इस पूजा में शामिल होंगे। तुम्हारे साथ मेरी उपस्थिति रहेगी।

हां हां। मुझे लगता है कि आपकी सैन्य पृष्ठभूमि के कारण, आपके मन में इस शब्द के प्रति विशेष सराहना होगी। यह एक हिब्रू शब्द है जिसका अनुवाद कुछ ऐसे अर्थों के साथ किया गया है जो सतही तौर पर एक-दूसरे से संबंधित नहीं लगते हैं।

हमें यहां कुछ मदरसा छात्र मिले हैं। यह हिब्रू शब्द पकाड है, और इसका अनुवाद यात्रा के लिए किया जाएगा। इसका अनुवाद जज करने के लिए भी किया जाएगा।

इसका अनुवाद आशीर्वाद के रूप में किया जाएगा। इसका अनुवाद गणना करने के लिए किया जाएगा। इसे नियुक्ति के लिए अनुवादित किया जाएगा।

यह कमांडिंग जनरल का निरीक्षण है। कमांडिंग जनरल हमसे मिलने आ रहे हैं, और यह अच्छी खबर हो सकती है या बुरी खबर हो सकती है। वह आने वाला है।

वह सैनिकों की गिनती करने जा रहा है। वह कुछ लोगों को एक कार्य के लिए नियुक्त करने जा रहा है, और वह यहाँ बिल्कुल यही कह रहा है। तुम लोग मिस्र जाने के लिए इधर-उधर भाग रहे हो।

अरे, जनरल आपसे मिलना चाहेंगे, और यदि आप उन्हें अनुमति देंगे, तो वह स्थिति को ठीक कर देंगे। तो हाँ, यह है। यह ईश्वर की वह व्यक्तिगत उपस्थिति है जो आपके संपर्क में आती है।

यह ईश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति है जो उनकी स्थिति में उनके संपर्क में आती है और उससे निपटती है। ठीक है, तो जब आप अपने बाइबिल अनुवादों में होते हैं, जब आप पुराने नियम में आते हैं, तो वह शब्द यात्रा, 10 में से नौ बार, यह एक होगा, और यह होगा कि ये सभी विचार वहां हैं। हाँ? मैं इन लोगों की तरह सोचने की कोशिश कर रहा हूँ।

हाँ। दुर्भाग्य से मुझे ऐसा करने में कोई परेशानी नहीं हुई। ठीक है, शायद थोड़ा अलग, लेकिन युरिपिडीज़ ने कहा कि पृथ्वी पर किसी की मूल भूमि को खोने से बड़ा कोई दुःख नहीं है, और



यही वह है जो ये लोग देख रहे हैं, और वे कोशिश कर रहे हैं, मुझे लगता है कि वे कोशिश कर रहे हैं, भगवान को देखने के लिए 185,000 अशशूरियों के भाले।

जी श्रीमान। वे जानते हैं कि अशशूरियों ने हर जगह क्या किया है। जी श्रीमान।

जी श्रीमान। उनके लिए यह कहना बहुत कठिन होगा, यशायाह वही करेगा जो परमेश्वर कहेगा। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं।

धन्यवाद धन्यवाद। हाँ, यहाँ एक शांत कमरे में, शांति से बैठकर, हमारे लिए यह कहना आसान है, ठीक है, वे मूर्ख लोग, उन्हें अलग तरीके से काम करना चाहिए था। नहीं, वे एक हताश स्थिति में हैं, और मानवीय रूप से कहें तो मिस्र के साथ गठबंधन ही एकमात्र संभव विकल्प है।

वे एकमात्र लोग हैं जो मानवीय रूप से उनकी मदद करने में सक्षम हैं। तो हाँ, हाँ, यह डरावना, डरावना व्यवसाय है। असीरियन अच्छे लोग नहीं थे।

ग्रेजुएट स्कूल में मेरे प्रोफेसरों में से एक हंगेरियन था, और हम मेसोपोटामिया, बेबीलोन और असीरिया का इतिहास पढ़ रहे थे, और लेखक कह रहा था, आप जानते हैं, इन लोगों को एक तरह की बुरी प्रेस मिली है। वे सचमुच ठीक हैं। यह, हंगरी के एक प्रोफेसर ने कहा, हाँ, अच्छे लोग, हम जर्मनों की तरह।

ठीक है। लेकिन हाँ, हाँ, धन्यवाद, धन्यवाद। यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है, कि यह बस थोड़ा सा नहीं था, ठीक है, हम यह कर सकते थे, या हम वह कर सकते थे।

यह संकट का समय है। ठीक है, पाँच मिनट तक मेरे साथ रुको। मैं अध्याय 31 को देखना चाहता हूँ, वहाँ सिर्फ नौ श्लोक हैं।

तो यह हमें यहाँ पटरी पर वापस लाएगा। यहाँ पाँचवीं विपत्ति आती है। अब यह और अधिक स्पष्ट है।

यदि मुझे कोई उपाधि दी जाती, तो मैं कहता कि श्लोक 30 वे लोग हैं जो मिस्र पर भरोसा करते हैं, न कि प्रभु पर, अध्याय 30, श्लोक एक। अध्याय 31, एक, मैं उन लोगों से कहूँगा जो यहोवा पर भरोसा नहीं रखेंगे, परन्तु मिस्र पर भरोसा रखेंगे। इसलिए, मैं वहाँ क्रम को उलटने का प्रयास करूँगा।

वे रथों पर भरोसा करते हैं क्योंकि वे बहुत हैं, घुड़सवारों पर भरोसा करते हैं क्योंकि वे बहुत ताकतवर होते हैं, लेकिन क्या नहीं करते? इस्राएल के पवित्र की ओर देखो। यहाँ फिर से, यह सर्वशक्तिमान उत्कृष्ट ईश्वर है जिसके समान कोई अन्य नहीं है जिसने स्वयं को आपको, इज़राइल के पवित्र को समर्पित कर दिया है, और आप इस पर कोई ध्यान नहीं देते हैं। श्लोक तीन, मिस्रवासी मनुष्य हैं, भगवान नहीं।

उनके घोड़े मांस के हैं, आत्मा के नहीं। जब यहोवा अपना हाथ बढ़ाएगा, तब सहायता करनेवाला ठोकर खाएगा, और सहायता करनेवाला गिरेगा, और वे सब एक संग नाश हो जाएंगे। मिस्रवासी आपकी सहायता करने में सक्षम नहीं होंगे।

लेकिन फिर यहां हम फिर से वादा करने के लिए वापस जाते हैं। श्लोक चार से नौ तक वचन हैं। यहोवा कहता है, जैसे सिंह या जवान सिंह अपने शिकार पर गुर्गता है, जब चरवाहों का एक दल उसके विरुद्ध चिल्लाता है, तो वह उनके चिल्लाने से नहीं डरता और न ही उनके शोर से घबराता है, उसी प्रकार स्वर्ग की सेनाओं का प्रभु भी।

हम अशूर की सेनाओं के विरुद्ध स्वर्ग की सेनाओं के स्वामी होने जा रहे हैं। स्वर्ग की सेनाओं का यहोवा पक्षियों के मंडराने के समान सिथ्योन पर्वत और उसकी पहाड़ी पर लड़ने के लिये उतरेगा। इस प्रकार स्वर्ग की सेनाओं का यहोवा यरूशलेम की रक्षा करेगा।

वह इसकी रक्षा करेगा और इसे वितरित करेगा। वह इसे छोड़ देगा और बचा लेगा। हे इस्राएल के बच्चों, जिस से लोगों ने बड़ा बलवा किया है, उस की ओर फिरो; क्योंकि उस समय सब लोग अपक्की अपक्की चान्दी और सोने की मूरतें, जिन्हें तुम्हारे ही लिथे तुम्हारे लिये बनाई गई हैं, त्याग देंगे।

वह विचार, यह पुस्तक में लगभग चौथी बार है। जब परमेश्वर कार्य करता है, तो आप देखेंगे कि आपकी मूर्तिपूजा कितनी मूर्खतापूर्ण थी और आप उन चीजों को बाहर फेंक देंगे। फिर, वे कौन सी चीजें हैं जिन पर मैं अपना जीवन चलाने के लिए, भगवान के बजाय अपने जीवन को कार्यान्वित करने के लिए निर्भर हूं? अब, यह यहाँ आता है।

यहाँ भविष्यवाणी है। अशूर बिना मनुष्य की तलवार से मारा जाएगा, और वह तलवार जो मनुष्य की नहीं है, उसे निगल जाएगी। वह तलवार से भाग जाएगा।

उसके नवयुवकों को बेगार में डाल दिया जाएगा। उसकी चट्टान भय से नष्ट हो जायेगी। यहोवा की वाणी है, जिसकी अग्नि सिथ्योन में है, और जिसकी भट्टी यरूशलेम में है, उसके हाकिम घबराकर झण्डा छोड़ देते हैं।

असीरियन सम्राट को नहीं पता कि उसका मुकाबला किससे है। वह उस प्रचंड आग के खिलाफ़ है जो यरूशलेम में जल रही है। और वह दिन आएगा जब उसे यह पता चल जाएगा।

हाँ? मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ। यह हिजकिय्याह की प्रार्थना के बारे में है। हाँ।

क्या इसे इस रूप में देखा जा सकता है कि जब उसने 15 वर्षों तक प्रार्थना की तो वह स्वयं ऐसा कर रहा था? नहीं, नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि यह वह महत्वपूर्ण क्षण है जब उन्होंने प्रार्थना की।

और हम वहाँ पहुंचेंगे और हम इसके बारे में बात करेंगे। लेकिन नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह 15 साल की प्रार्थना है। ठीक है, मुझे प्रार्थना करने दो।

पिताजी, धन्यवाद. धन्यवाद कि आपने खुद को हजारों पीढ़ियों के लिए भरोसेमंद साबित किया है। उन सभी को धन्यवाद जो हमसे पहले चले गए, आज रात उस महान स्वर्गीय भीड़ का हिस्सा जो कह सकते हैं कि हमने उस पर भरोसा किया और उसने हमें बचाया।

हे भगवान, हमारी मदद करो. जब हम निर्णयों का सामना कर रहे हों तो मेरी मदद करें, स्थिति में जल्दबाजी न करें और इसे अपनी सरलता, अपनी बुद्धि, अपनी ताकत से हल करें, बल्कि आपको यह कहने की अनुमति दें कि, यही रास्ता है, इसमें चलें और खुशी से प्रतिक्रिया दें. आपके नाम पर, आमीन।

ठीक है, हम तय समय पर वापस आ गए हैं और अगली बार हम अध्याय 32 और 33 के साथ आगे बढ़ेंगे। यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 15, यशायाह अध्याय 30 और 31 है।

भगवान आपका भला करे।